B.M.M. College Bahera Darbhanga (L.N.M.U)
B.A. (Hons) Part 1 Paper - II

18-08-2020

Dr. ... Singh
Deptt. of Economics

भारत में सहकारी विपणन का संगठन

भारत में सहकारी विपणन का संगठन निम्न प्रकार का पाया जाता है :

(1) प्राथमिक सहकारी विपणन समितियाँ - यह समितियाँ ग्राम स्तर पर कार्य करती है तथा अपने सदस्यों के लाभ के लिए कृषि सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय एवं विक्रय, एकीकरण, श्रेणीकरण, आवश्यक बीज, खाद व मशीन, आदि की पूर्ति करती है तथा विभिन्न सहायता प्रदान करती है। आवश्यकता इस प्रकार की समितियां किसी उद्देश्य विशेष के लिए न बनाकर कई उद्देश्यों की पूर्ति हेतु बनायी जाती है। इस समय प्राथमिक सहकारी समितियों की संख्या 7,000 है।

(2) केन्द्रीय सहकारी विपणन समितियाँ - यह समितियाँ प्राथमिक सहकारी विपणन समितियों के ऊपर होती है जो शहरी क्षेत्रों या कस्बों में पायी जाती है। इन समितियों का कार्य प्राथमिक समितियों व अपने सदस्यों की सहायता करना, क्रय-विक्रय करना व अपना सम्बन्ध प्रान्तीय सहकारी विपणन समिति या संघ से रखना है। इस समय इस प्रकार की समितियों की संख्या 160 है।

(3) प्रान्तीय सहकारी विपणन समितियाँ - यह समितियाँ राज्य स्तर पर सर्वोच्च संस्था (Apex Institution) के रूप में कार्य करती है तथा केन्द्रीय विपणन समितियों के माध्यम से प्राथमिक समितियों की सहायता करती है। यह समितियाँ सामान्यतया प्रदेश या प्रान्त की राजधानी में पायी जाती है। इस समय राज्य स्तर पर 29 शीर्ष समितियाँ और 25 विपणन फेडरेशन कार्य कर रहे हैं।

(4) राष्ट्रीय सहकारी कृषि विपणन संगठन (NAFED) - यह सहकारी विपणन के लिए शीर्ष संस्था है जो राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करती है। इसका मुख्य उद्देश्य कृषि एवं अन्य वस्तुओं में अपने सदस्यों के विपणन एवं व्यापारिक क्रिया-कलापों में समन्वय लाना, उन्हें प्रोत्साहित करना, अन्तर्राष्ट्रीय एवं अन्तर्राज्यीय कृषि व्यापार को बढ़ावा देना। यह संस्था 1958 में स्थापित हुई थी।

E.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A. (Hons) Part-1 Paper-1

18.08-2020

Dr. S. K. Singh.
Dept of Economics

लाभ का समाजवादी सिद्धांत
(THE SOCIALIST THEORY OF PROFIT)

आशय एवं व्याख्या (Meaning and Explanation)

लाभ के समाजवादी सिद्धांत को समाजवादी विचारक कार्ल मार्क्स (Karl Marx) के द्वारा प्रतिपादित किया गया है। समाजवादियों का मत है कि लाभ का जन्म इसलिए होता है कि श्रमिकों को उनके श्रम का उचित पुरस्कार नहीं दिया जाता है। इस प्रकार लाभ की उत्पत्ति का मुख्य कारण श्रमिकों का शोषण है। साहसी श्रमिकों के पुरस्कार को छीन लेते है। दूसरे शब्दो में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत श्रमिकों के द्वारा कुल उत्पादन का एक बहुत थोड़ा भाग श्रमिकों को उनके पुरस्कार के रूप में दिया जाता है और इसके अधिकांश भाग को, जिसे कार्ल मार्क्स ने अतिरिक्त मूल्य (Surplus value) कहा है, पूंजीपति लाभ के रूप में स्वयं हड़प लेते है। इसलिए कार्ल मार्क्स ने लाभ को कानूनी डाका (Legalised dacoity) कहा है।

आलोचना (Criticism)

लाभ के समाजवादी सिद्धांत की प्रमुख आलोचना निम्न है:

1. लाभ का जन्म श्रम के शोषण से नहीं बल्कि साहसियों की योग्यता से (Profit does not arise due to exploitation but is arises due to ability of Entrepreneurs) - आलोचकों का कहना है, कि लाभ का जन्म श्रमिकों के शोषण से नहीं बल्कि साहसियों की योग्यता से होती है। अब श्रमिकों अपने शोषण के प्रति सचेत हो गए है। यदि उनका शोषण होता है, तो वे संगठित होकर अपने को बचा लेते है।

2. उत्पादन केवल श्रम का ही परिणाम नहीं (Production is not the Result of Labour only) - समाजवादी इस बात को मान लेते है कि उत्पादन केवल श्रमिकों द्वारा होता है। उनकी यह धारणा गलत है, क्योंकि उत्पत्ति के अन्य साधन भी उत्पादन के उतने ही महत्वपूर्ण है, जितना कि श्रम। हम किसी भी साधन के कार्य को कम नहीं आंक सकते, अतः साहसी के लाभ को कानूनी डाका (Legalised dacoity) कहना उचित नहीं है।